हरदीप और उसकी अंधविश्वासी मां

भगवंत रसूलपुरी

अनुवाद

डा. सुनीता

₹ 15.00 ISBN 978-81-237-6163-3

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

यह पुस्तक हरियाणा पंजाबी साहित्य अकादेमी, के सहयोग से चंडीगढ़ में आयोजित कार्यशाला में तैयार की गई है।

ISBN 978-81-237-6163-3

पहला संस्करण : 2011 *(शक 1933)*

© श्री भगवंत रसूलपुरी

Original : Hardeep Aur Uski Andhvishwasi ma *(Punjabi)*

अनुवाद © नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, 2010

₹ 15.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया
वसंत कुंज, फेज-II, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित

नवसाक्षर साहित्यमाला

हरदीप और उसकी अंधविश्वासी मां

भगवंत रसूलपुरी

अनुवाद
डा. सुनीता

चित्रांकन
देवयानी दासगुप्ता

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

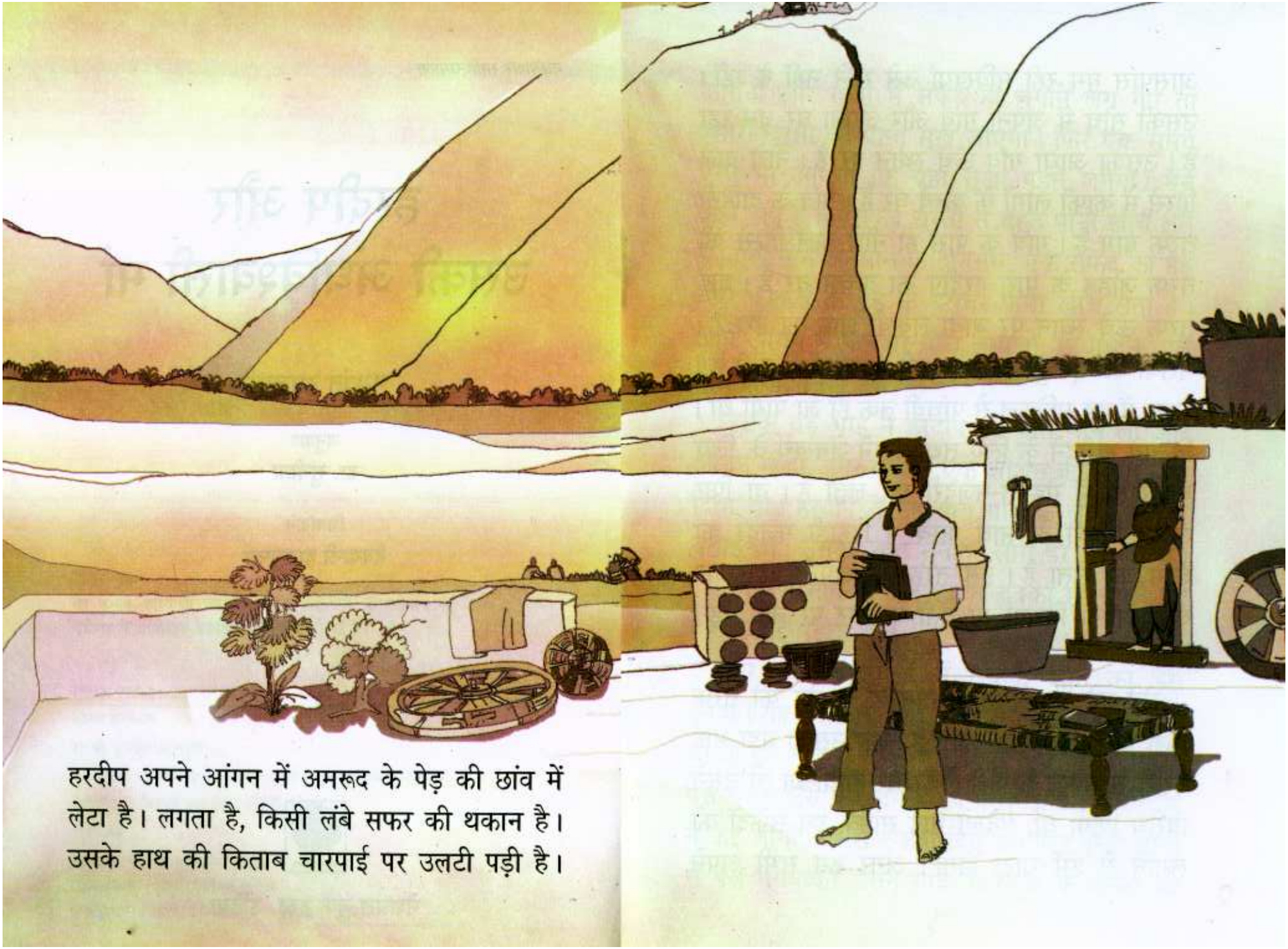

हरदीप अपने आंगन में अमरूद के पेड़ की छांव में लेटा है। लगता है, किसी लंबे सफर की थकान है। उसके हाथ की किताब चारपाई पर उलटी पड़ी है।

आसपास घूम रही मक्खियां उसे सोने नहीं दे रहीं। उसकी सोच में अपना गांव और अपना घर घूम रहा है। उसका आधा गांव ऊंचे स्थान पर है। नीचे वाले हिस्से में काफी लोगों के कच्चे घर हैं। गांव के दाहिनी तरफ बाग है। गांव के पास ही नीचे वाले हिस्से की तरफ जोहड़ के पास हरदीप का कच्चा घर है। बाईं तरफ ऊंचे स्थान पर बाबा लक्खी शाह का डेरा है। गरीबी के बावजूद उसने अपनी पढ़ाई जारी रखी है। स्कूल में वह मुश्किल से पांचवीं तक ही जा पाया था। किताबें खरीदने के लिए तथा अपने जेबखर्च के लिए वह खेतों में मेहनत-मजदूरी कर लेता है। या फिर अर्जुन मिस्त्री के साथ कस्बे में दिहाड़ी मजदूर का काम कर लेता है। इस तरह वह अपनी पढ़ाई का बोझ अपनी विधवा मां बंती के सिर पर नहीं पड़ने देता।

लेटे-लेटे उसका ध्यान अमरूद के पेड़ की तरफ चला गया। उसे याद आता है...जब उसका बड़ा भाई नर्सरी से सफेदे के पौधे लेकर घर आया था तो उसने विरोध किया था, "देखो भाई साहब, इन सफेदों को लगाने से हमें घाटा होगा। अगर हम सभी अपने

आंगनों और खेतों में सफेदे ही लगाने लग गए तो हमारी धरती का पानी सूख जाएगा। फिर एक समय ऐसा भी आएगा कि यहां सूखा पड़ने लगेगा। मैंने कहीं पढ़ा है कि सफेदे धरती से बहुत पानी खींच लेते हैं। एक मोटे अनुमान के अनुसार, एक सफेदे का पेड़ बीस कीकरों के पेड़ के बराबर पानी खींच लेता है। आप आंगन में फलदार पौधे लगाओ, छाया देने वाले पौधे लगाओ।"

उसके बड़े भाई ने हरदीप की बात मान ली और आंगन में दो अमरूद और एक शीशम का पौधा लगा दिया था। हरदीप ने यह बात गांव के लोगों को भी बताई थी। उसकी बात सुनकर लोग डर भी गए थे। इसी कारण गांव में कोई इक्का-दुक्का ही सफेदे का पेड़ दिखाई पड़ता था।

फिर उसके खयालों में लक्खी शाह का डेरा आया। यह डेरा जब गांव के ऊंचे स्थान पर बन रहा था तो इस गांव से जाकर विदेश में रहने वाले लोगों ने पैसे भेजने शुरू कर दिए। अपनी समझदारी से हरदीप ने कई लोगों के पैसे रुकवा दिए थे। फिर इन्हीं लोगों से पैसे मंगवाकर उसने गांव के स्कूल के कमरों की

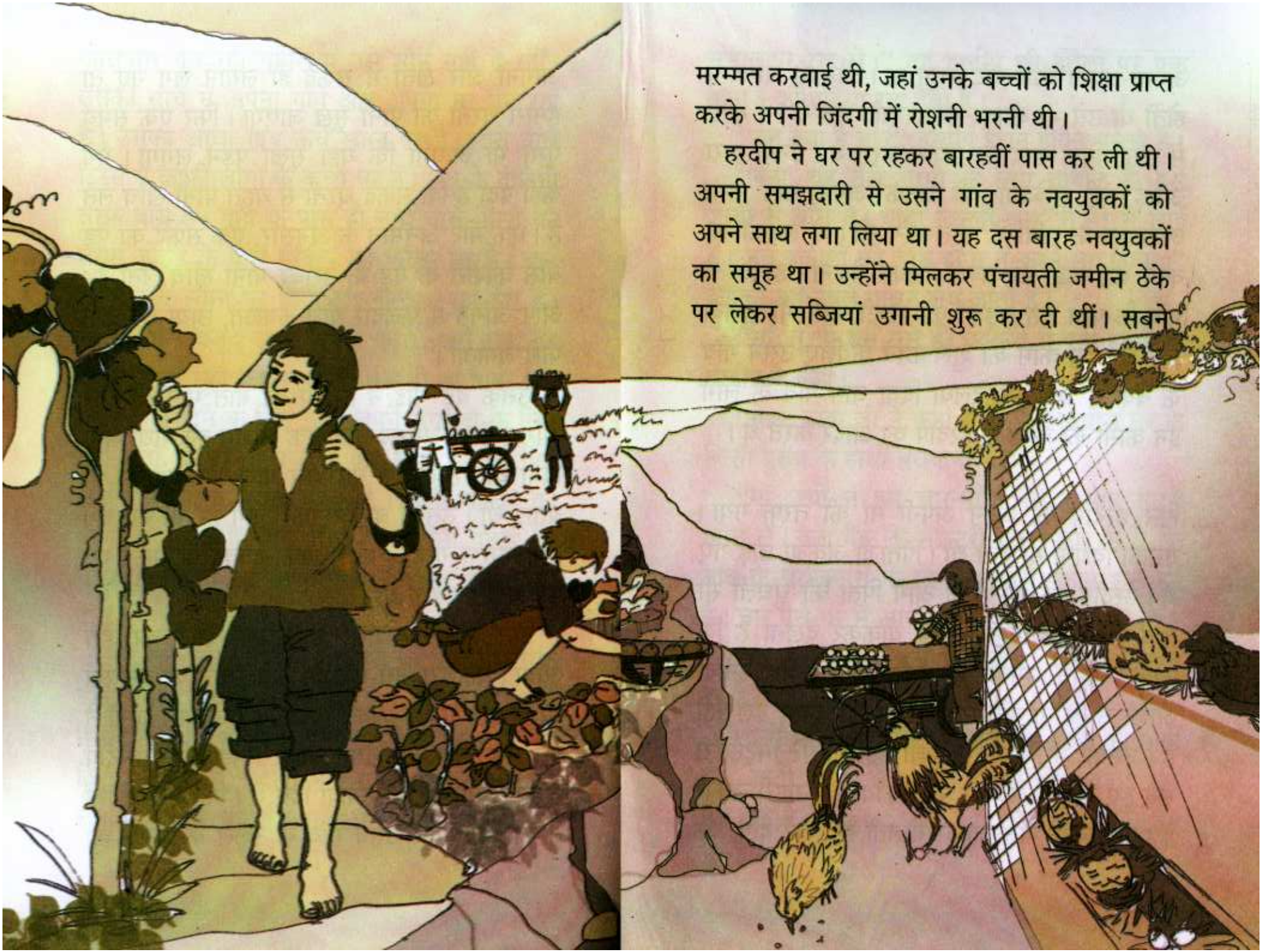

मरम्मत करवाई थी, जहां उनके बच्चों को शिक्षा प्राप्त करके अपनी जिंदगी में रोशनी भरनी थी।

हरदीप ने घर पर रहकर बारहवीं पास कर ली थी। अपनी समझदारी से उसने गांव के नवयुवकों को अपने साथ लगा लिया था। यह दस बारह नवयुवकों का समूह था। उन्होंने मिलकर पंचायती जमीन ठेके पर लेकर सब्जियां उगानी शुरू कर दी थीं। सबने

अपना-अपना काम बांट लिया था। और जो आमदनी होती थी उसे भी बराबर-बराबर बांट लेते थे। वे खेतों में रासायनिक खाद का प्रयोग करते थे। उनके द्वारा उगाई गई सब्जियों की उनके अपने गांव तथा आसपास के गांवों में बहुत मांग थी। दो लड़कों का काम था, रेहड़ी पर सब्जी रखकर बेचना। हरदीप ने गांव के पांच छह लड़कों को पोल्ट्री फार्म भी खुलवा दिए थे। इस काम को शुरू करने के लिए उसने गांव के बैंक से ऋण भी दिलवा दिया था। गांव के लोग इन कामों की वजह से हरदीप का आदर करते थे।

फिर हरदीप का ध्यान अपनी मां की तरफ गया। उसकी विधवा मां बंती थी। पिताजी अकेला छोड़ गए थे। हरदीप की आंखों के आगे पिता की धुंधली सी तस्वीर है। अचानक हरदीप चौंककर देखता है कि उसके सामने उसकी मां बैठी हुई है। वह उनींदी आंखों से ही मां की तरफ देखता है। दुपहर ढल रही है। उसकी मां की सांस फूली हुई है। पैर मिट्टी से सने हुए हैं। मां के चेहरे पर थकावट की गहरी लकीरें हैं। वह उसके पास आकर बोलती है, "बेटे दीप, यह

संभालकर रख ले।" वह हरदीप की हथेली पर एक कागज की पुड़िया रख देती है।

"यह क्या है मां?" हरदीप हैरान होकर पूछता है।

"बेटा, यह तेरी भाभी के लिए ताबीज है, इसे जल्दी से बांध दे। बाबा लक्खी शाह के डेरे से लाई हूं। अब वकीलों की तरह बहस न करने लग जाना।" कहकर वह उपले पाथने लग जाती है।

"मां, तू भी बस ऐसे ही चक्करों में पड़ी हुई है।" हरदीप ने कहा।

"बेटा, बाबा जी ने कहा है कि यह ताबीज घर के किसी पुरुष के हाथों बंधवाना है।"

"मां, क्यों न हम चार-पांच भैंसे रखकर डेयरी खोल लें। कल बैंक के सेक्रेटरी मुझसे कह रहे थे कि गांव के बेरोजगारों के लिए सरकारी स्कीम शुरू हुई है। चार पैसे घर में आएंगे ही।"

"पर बेटा, इतना दूध किसे देंगे? शहर तो बहुत दूर है।"

"क्यों मां, हमारे गांव में मिल्कफैड वालों की गाड़ी रोज आती है दूध लेने। घर बैठे ही हर पखवाड़े बंधे पैसे आएंगे।"

"बेटा, जैसे तुझे ठीक लगता है, वैसे कर ले। पर पहले ताबीज बंधवा दे।"

फिर उसने मां पर जोर डालकर बैंक से ऋण लेकर चार भैंसें खरीद ली थीं। घर के सभी लोग भैंसों को देखभाल करते थे। दूध के बंधे पैसे आने लगे थे।

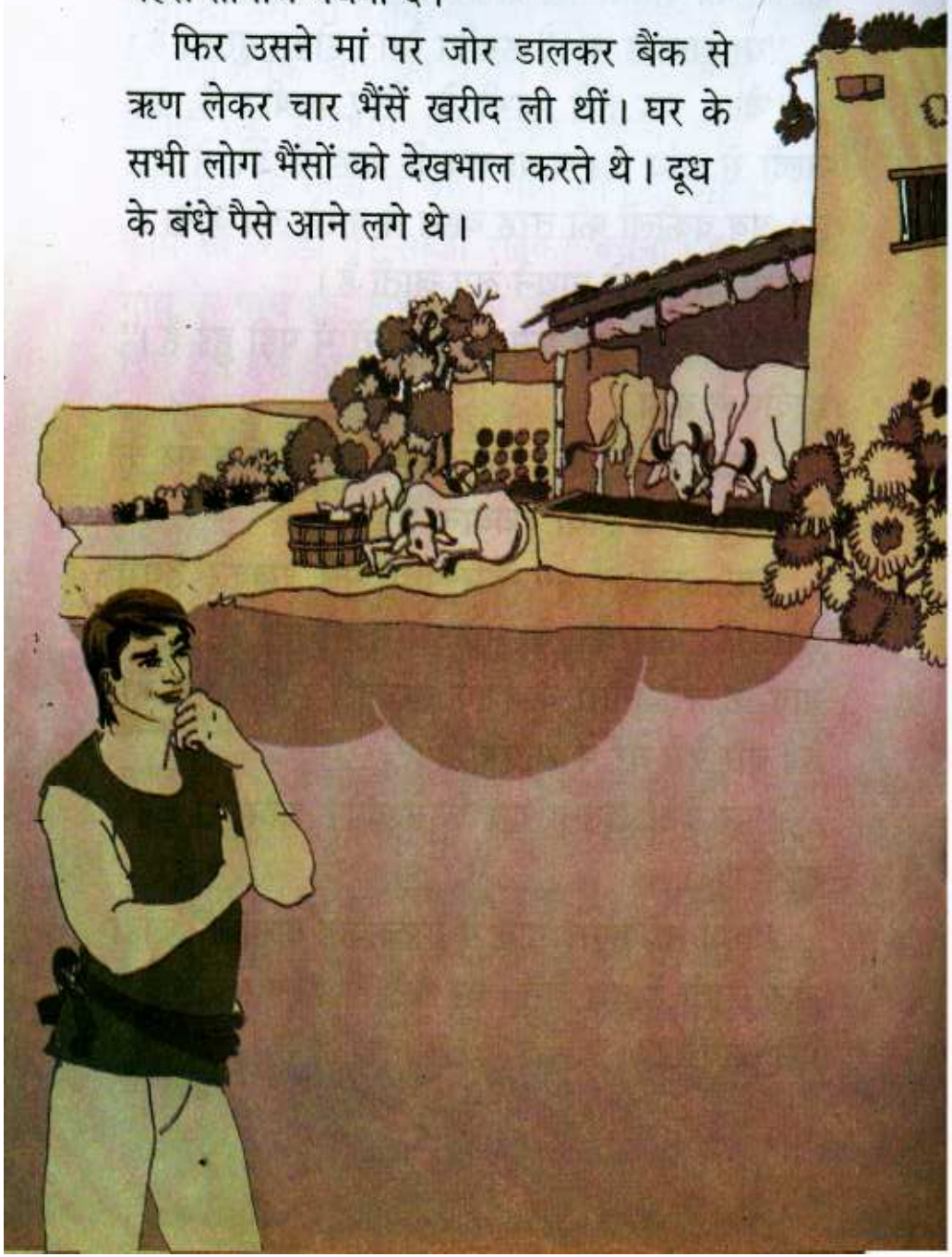

हरदीप का शरीर अभी भी थकान महसूस कर रहा है। मां की पर्ची और बातों की तरफ उसका ध्यान नहीं जाता। वह फिर लेटा रहता है।

"औए दीपे, उठ! मैंने उपले भी पाथ लिए और तू अभी चारपाई ही तोड़े जा रहा है।"

हरदीप का ध्यान फिर से उस पुड़िया की ओर चला गया। उसकी मां चारपाई पर बैठ जाती है। कहती है, "बेटा, बाबा जी कहते थे कि इस बार तेरे घर पोता आएगा। बाबा जी ने यह भी कहा था कि तुम्हारे घर बड़े बुरे ग्रह घुसे हुए है।"

हरदीप बस सुनता रहता है। उसे पता है कि मां पर उसकी किसी बात का असर नहीं होगा। चाहे हरदीप लाख बार मां को समझाता, पर वह डेरे पर जाती ही रहती थी। कभी कहीं दीया जलाने जा रही है, कि भैंसों का दूध सूख गया। पर हरदीप मां के दिमाग में लगे अंधविश्वासों के जाले को साफ क़रने के लए दलीलों का झाड़ू फेरता ही रहता था।

रसोई से निकलकर भाभी हरदीप को रोटी दे गई। उसकी सोच भाभी की तरफ चली जाती है। अभी उसके विवाह को महीना भर हुआ था। घर का काम

करते-करते वह कराहने लग जाती थी।...उसका चेहरा एकदम पीला पड़ जाता था। चारपाई पर लेटे हुए भी चैन नहीं पड़ता था। सारे घर के लोग परेशान थे। उसे हर पांच-सात दिन बाद ऐसा हो जाता था। अगर पूछो तो बस इतना ही बताती कि पेट में दाहिनी तरफ दर्द होता है।

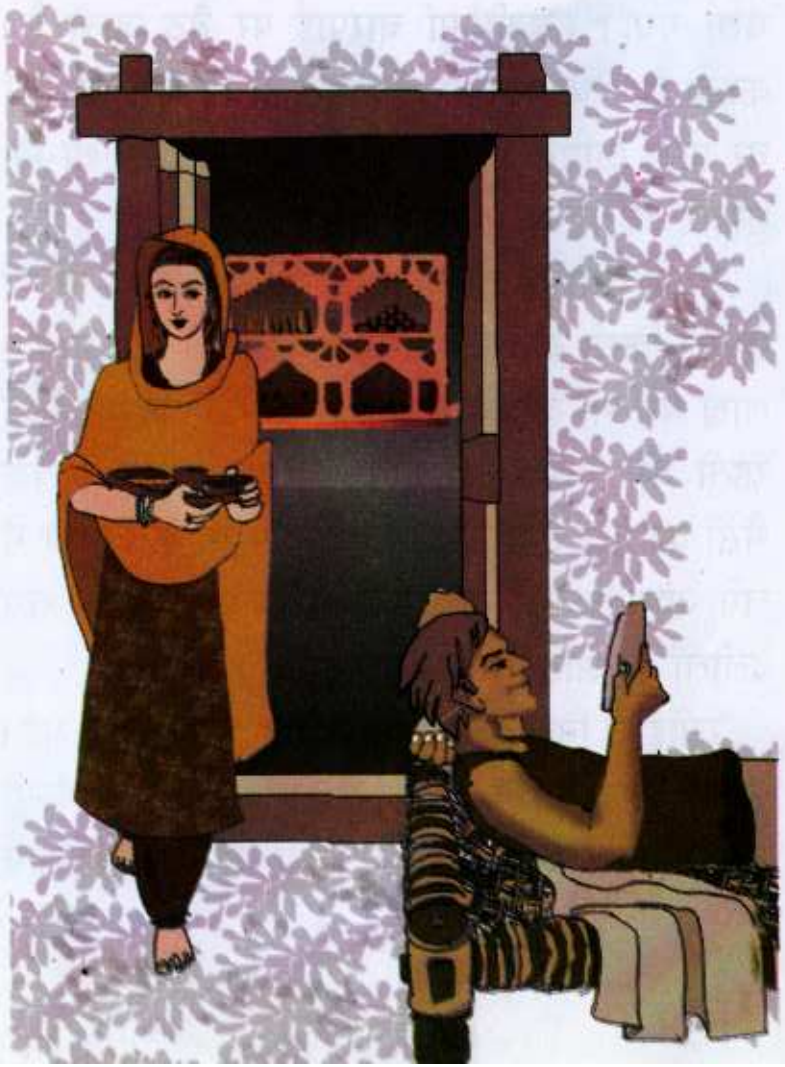

कुछ ही दिनों में भाभी का शरीर तिनके के समान हो गया था। घर का काम धीरे-धीरे करती थी। आस पड़ोस की बुजुर्ग स्त्रियों ने मां के मन में वह वहम डाल दिया कि इसे कोई ऊपरी हवा लगी है, मायके के से ही इसे कोई भूत-प्रेत चिपटा हुआ है। दूसरी कहती, "बहन, इसे तो कोई जिन्न चिपट गया है और कहते हैं, यह जिन्न तो पूरे घर का नाश कर देता है। तू पंडित से मत पूछ। तुरंत बाबा लक्खी शाह के डेरे जा। लड़की को महीने भर में आराम नहीं आया तो मेरे मुंह पे थूक देना।"

मां के मन में डर बैठ गया था। मां भाभी को लेकर बाबा लक्खी शाह के डेरे पर अक्सर जाने लगी थी।

"बीबी, तू समझती क्यों नहीं? भाभी का इलाज डॉक्टरों के पास है।" हरदीप ने बहुत गुस्से में मां से कहा था। डॉक्टर का इलाज महंगा था। घर में गरीबी थी। बड़े भाई की तनख्वाह, भैसों के दूध और खेती के काम से जो पैसे आते थे, उनसे बैंकों की किस्तें उतारकर घर का गुजारा मुश्किल से ही चलता था।

हरदीप ने पैसों का प्रबंध करके भाभी को शहर के डॉक्टर के पास दिखाया। डॉक्टर ने हरदीप को अलग

बुलाकर कहा, "अगर आप लोग कुछ दिन और न आते, तो रोग को संभालना मुश्किल हो जाता।"

"डॉक्टर जी, यह कौन सा रोग है?" हरदीप ने जानकारी ली।

"बेटा, यह दर्द अंतड़ियों में सूजन के आ जाने से होता है, यह रोग अक्सर औरतों को होता है।"

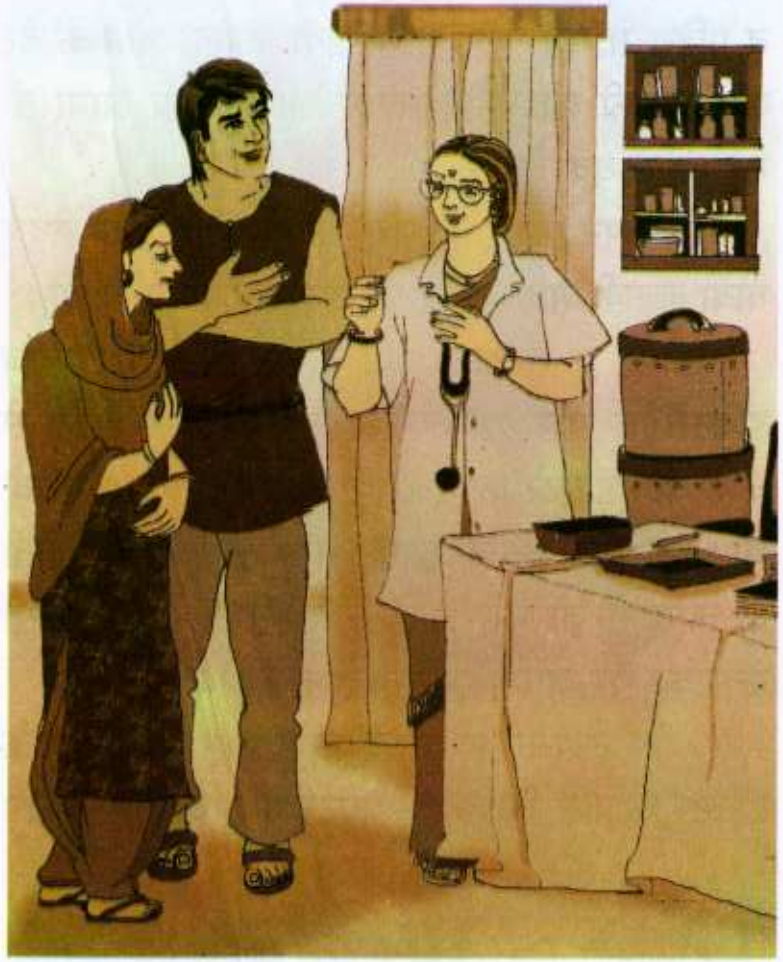

भाभी का इलाज लगातार चला। चार-पांच महीनों के बाद चेहरे की रौनक लौटने लगी थी। मां को यकीन था कि बाबा लक्खी शाह के चमत्कार का असर है। घर के लोगों को बिना बताए वह डेरे हो आई थी। मां के इस स्वभाव से चिढ़कर हरदीप कई कई दिन अपनी मां से बोलता नहीं था।

भाभी के बारे में सोचते हुए हरदीप को प्यास लगीं। उसने चारपाई की पैंद में फंसा हुआ गिलास उठाया ही था तभी उसका ध्यान फिर से मां की पुड़िया की ओर चला गया। पानी पीकर उसने पुड़िया खोली। उसमें पीतल का एक टुकड़ा और साथ में एक लाल धागा है, एक कागज का छोटा सा टुकड़ा है। वह कागज का टुकड़ा पढ़ने लगा। उस पर हिंदी के कुछ उलटे सीधे अक्षर थे।

हरदीप के मन में एक विचार उठा। उसने दूसरे कागज के टुकड़े पर दो तीन पंक्तियां पंजाबी में लिखी और असली कागज के टुकड़े की चिंदी चिंदी कर दी। पीतल के खोल में अपने हाथ से लिखे कागज के टुकड़े को डालकर खोल को बंद कर दिया। लाल धागे में ताबीज को पिरोकर मेज पर रखकर, फिर से

किताब पढ़ने लग गया। उसकी आंखों के आगे बाबा लक्खी शाह का डेरा घूमने लगा। उसका यह डेरा पिछले सात-आठ सालों से चल रहा है। बाबा लक्खी शाह अपनी जवानी के दिनों में बलवान उसका शरीर विशालकाय था। एक बार वह अपने से कमतर एक पहलवान से हार गया। गांव के लोगों ने उसका बहुत मजाक उड़ाया और चुभते बोल बोले। इसके बाद उसने एक दिन पहलवानी का लंगोट उतारकर अपने शरीर पर गेरुआ चादर डाल ली। एक साधु के डेरे पर जाकर बैठ गया। फिर वह लखविंदर सिंग से लक्खी शाह बन गया।

जब डेरे के बूढ़े बाबा करोड़ी शाह का देहांत हो गया तो लक्खी शाह ने डेरा संभाल लिया। इस डेरे की महिमा आसपास के गांवों, तेहंग, अप्परा, भागसिंगपुरा आदि में फैलने लगी थी। जब हरदीप बाबा के डेरे की तरफ जाती बूढ़ियों और युवतियों को देखता तो परेशान हो जाता था।

ऐसे ही विचारों में डूबे हुए हरदीप के सिरहाने आकर उसकी भाभी ने पूछा, "अरे दीपे! ताबीज बन गया कि..."

भाभी की आवाज से वह चौंका। बोला नहीं, बस किताब से ध्यान हटाकर आंखों के संकेत से ताबीज की ओर इशारा करता है। भाभी ताबीज लेकर जाते हुए मुड़कर कहती है, "तेरा भला हो।"

इस घटना को हुए तीनेक महीने बीत जाते हैं। हरदीप की भाभी का पैर भारी है। उसकी मां डेरे पर जाकर दीया जला आयी। समय और आगे सरका। भाभी ने बेटे को जन्म दिया।

"देख ले बेटा, बाबा जी ने हमारी फरियाद सुन ली है। बड़े पहुंचे हुए बाबा हैं, मेरे बेटे की जड़ लग गई है।"

मां के चेहरे पर खुशी नाच रही है।

उसकी मां अपने बेटों से छिपाकर बाबा जी के लिए गेरुए रंग की चादरें बनाती है। एक काला बकरा और संतरा मार्का शराब की पेटी खरीदती है।

यह सारा चढ़ावा चढ़ाने से पहले ताबीज उतारकर बहते पानी में डालना था। फिर बच्चे को लेकर डेरे जाना था। उसकी मां इस बात के लिए अड़ी हुई थी।

मां हरदीप की भाभी के गले से ताबीज उतारती है।

मुहल्ले की बुजुर्ग स्त्रियां और जवान औरतें आ जाती हैं। मुहल्ले के बुजुर्ग और हरदीप के साथी लड़के भी आ जाते हैं। जब उसकी मां ताबीज उतारकर हाथ में पकड़ लेती है तो हरदीप कहता है, "मां, इस ताबीज को खोलकर तो देख, इसमें ऐसा कौन सा मंत्र लिखा है जिससे भाभी की गोद में बेटा आया है।"

"नहीं बेटा! ताबीज को खोला नहीं जाता। पगला कहीं का!"

हरदीप जबरदस्ती ताबीज खोलकर आंगन में खड़ी एक स्कूल में पढ़ने वाली लड़की को पकड़ा देता है, "देख तो, इस ताबीज में क्या लिखा है?"

वह छोटे से उस कागज के टुकड़े को नहीं-नहीं करती हुई भी पकड़ लेती है। उसके हाथ कांप रहे हैं। चेहरे पर डर के निशान उभर आते हैं।

हरदीप आसपास भीड़ पर नजर डालता है... नंबरदार का अपनी

मूछों पर फिरता हाथ वहीं रुक जाता है, देबू लंगड़ा लाठी के सहारे बिना हिले-डुले खड़ा एकटक कागज का टुकड़ा पकड़े आंगन की बहू की ओर ताकता है, संती चुगलखोर मुंह बाए मटपैले शीशे वाली ऐनक से

हैरानी से झांकती है, मां किसी अनदेखे डर के कारण चारपाई पर हाथ जोड़े बैठी है और उस लड़की के पढ़ने का इंतजार कर रही है।

कुछ देर बाद लड़की खामोशी को तोड़ते हुए पढ़ती है, "लड़का बाबे की शक्ति से नहीं होगा। दो तरह के शुक्राणुओं के बढ़ घटकर जुड़ने से होगा, जिन्हें क्रोमोसोम कहते हैं।"

हैरानी से लोग मुंह बाए रह जाते हैं। डेरे जाने के लिए गठरी पकड़कर बैठी हरदीप की मां के हाथों की पकड़ ढीली पड़ जाती है। वह बेटे को गले लगाने के लिए उठ खड़ी होती है।